कहानियाँ

कक्षा : 6–8

एडवांस लेवल

2023-24

इस पुस्तिका की तैयारी में सहयोग दिया है :

भरत शर्मा, मेंटर टीचर

पवन दहिया, मेंटर टीचर

कमलेश तोमर, मेंटर टीचर

निकेता मलिक, मेंटर टीचर

बबिता भंडारी, मेंटर टीचर

मीनू कुमारी, मेंटर टीचर

मुकेश चौधरी, प्रोजेक्ट लीड, ई एम ओ

दिशा अग्रवाल, सी एम आई ई फेलो, ई एम ओ

अमृतलाल यादव, प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन

कोमल, प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन

धर्मवीर, प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन

शिव कुमार, प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन

अभय कुमार, प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन

सम्पादन

डॉ. फ़ैयाज़ अहमद, प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन

सायरा बानो, प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन

छायांकन

अदिति, एन आई डी

गौरी शिलेन्द्रण, एन आई डी

ख़ुशी चौहान, एन आई डी

त्रिवेन्द्र डाँगी, एन आई डी

ATISHI
आतिशी

सत्यमेव जयते

MINISTER
GOVT. OF NCT OF DELHI
मंत्री, दिल्ली सरकार
DELHI SECTT, I.P. ESTATE
दिल्ली सचिवालय, आई0पी0एस्टेट
NEW DELHI-110002
नई दिल्ली-110002

प्यारे बच्चो,

आप सभी की शुरुआती पढ़ाई के लिए ज़रूरी है कि आपको पढ़ना–लिखना और बुनियादी गणित के सवालों को हल करना आना चाहिए। अपनी इन्हीं क्षमताओं के आधार पर आप आगे की कक्षाओं में अन्य विषयों को सीख सकते हैं। आपके अन्दर इन्हीं कौशलों को विकसित करने के लिए मिशन बुनियाद की शुरुआत की गई है, जहाँ कक्षा तीसरी से आठवीं तक के बच्चों की आवश्यकताओं को समझते हुए उन्हें सीखने के मौक़े दिए जाते हैं।

इस कार्यक्रम के माध्यम से हमारा उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि हर बच्चा सीखने में सक्षम हो। मिशन बुनियाद की कक्षाओं में आपको उस स्तर से सिखाना शुरू किया जाएगा जहाँ आप अभी हैं और उस स्तर तक पहुँचाया जाएगा जहाँ आप जाना चाहते हैं। इसके द्वारा आपको आगे बढ़ने का हर वो मौक़ा दिया जाएगा जिसकी आपको ज़रूरत है।

इस नए सत्र में भी मिशन बुनियाद आप सभी के बुनियादी गणित और पढ़ने–लिखने के कौशल को निखारने का काम करेगा। जहाँ बहुत–सी कहानियाँ, गतिविधियाँ और खेल आपके सीखने के इस सफ़र को और मज़ेदार बना देंगे। मिशन बुनियाद की कक्षाओं में आप सभी को ऐसा वातावरण मिलेगा जिससे आप अपनी गति से सीख सकेंगे।

इसलिए आप लोगों से मेरी यह अपेक्षा है कि आप सभी बच्चे पूरे मन से, बहुत कुछ नया सीखने के लिए मिशन बुनियाद की कक्षाओं में ज़रूर शामिल हों। मुझे उम्मीद है कि मिशन बुनियाद से आप सभी ज़रूर लाभान्वित होंगे। बहुत अच्छे से पढ़ना–लिखना और गणित के सवालों को हल करना सीख जाएँगे और भारत को दुनिया का नंबर – 1 देश बनाने में अपना योगदान देंगे।

शुभकामनाओं के साथ,

atishi

आतिशी

शिक्षा मंत्री, एनसीटी, दिल्ली सरकार

बंटीलाल

मैं और मीठी बहुत दिनों से घर में रह रहे हैं।

मीठी जब छोटी थी, तब हम दोनों रोज़ एक साथ घूमने जाते थे।

एक दिन मीठी की नटखट बिल्ली ने मेरे पेट को फाड़ दिया!

उस दिन मीठी बहुत रोई। उसे लगा कि मैं तो मर ही गई।

तब माँ ने मेरे पेट में रुई भर दी। उन्होंने धागे से मेरा पेट सिल दिया।

मेरी हालत में सुधार देखकर मीठी को बहुत मज़ा आया। उसने मेरे शरीर पर काले और पीले रंग की धारीदार पट्टियाँ लगा दीं। बड़े प्यार–से लाल रंग भी भर दिया।

उस दिन से सभी मुझे बंटीलाल कहकर बुलाने लगे।

यह नया नाम तो मुझे कमाल का लगा...ह ह ह ह!

Writer : Malini Mukherjee Translators : Soumitra, Saira Illustrator : Hariom Patidar

बंटीलाल

1. इस कहानी के पात्रों के नाम लिखिए ?

_____ _____ _____ _____

_____ _____ _____ _____

2. मीठी क्यों रोई?

_____

_____

3. आपको किन–किन बातों पर रोना आता है ? लिखिए।

_____

_____

_____

_____

4. अगर आपका कोई दोस्त उदास हो जाए तो आप उसे हँसाने के लिए क्या–क्या करेंगे ?

_____

_____

_____

_____

5. आप अपने किसी मनपसंद खिलौने के बारे में ख़ास बात लिखिए।

_____

_____

_____

_____

_____

सभी ज़रूरी हैं

चंटू और मंटू टीकमपुर में रहते थे। उनके पिता किसान थे। एक दिन वे खेत में गए। आकाश में एक जहाज़ उड़ रहा था। उनकी नज़र जहाज़ पर ही थी। चंटू ने गेंद आकाश की ओर उछाल दी। गेंद बहुत दूर जाकर गिरी। उनकी पालतू बिल्ली गेंद को पकड़ने दौड़ी।

कुछ देर बाद चंटू और मंटू को ख़्याल आया कि बिल्ली आख़िर है कहाँ? वे दौड़कर उस ओर गए। जब पास पहुँचे तो पता चला कि बिल्ली एक फन वाले ज़हरीले साँप के साथ लड़ रही है। चंटू ने एक पत्थर उठा लिया, लेकिन मंटू ने उसे मना किया और बिल्ली को अपने पास बुला लिया। चंटू बोल उठा, "अरे! वह साँप कहीं जाकर छिप गया है। उसे मार देना चाहिए था।" मंटू बोला, "नहीं, साँप तो हमारी फ़सलों को नुक़सान होने से बचाते हैं।" तब चंटू को ध्यान आया। वह बोला, "अरे हाँ! मैं तो भूल ही गया था कि साँप चूहों को खाकर हमारी मदद करते हैं।" अब चंटू और मंटू प्यार से अपनी बिल्ली के साथ खेलने लगे।

Writer : Janpad Kannauj

Illustrator : Subham Lakhera

सभी ज़रूरी हैं

1. चंटू और मंटू के गाँव का क्या नाम था ?

2. गेंद के उछलने के बाद क्या हुआ था ?

3. साँप फ़सलों को बचाने में हमारी मदद कैसे करते हैं ? लिखिए।

4. आपने साँप किन–किन जगहों पर देखे हैं, उनकी एक सूची बनाइए ?

5. साँपों के बारे में कुछ ख़ास बातें किसी से चर्चा करके लिखिए।

चिपकी

वैसे तो मेरा काम कोई बुरा नहीं है। बस कीड़े–मकौड़े ही खाती हूँ। पर बेला की मम्मी मुझसे बहुत डरती हैं। मुझे देखते ही चीख पड़ती हैं– ''उईऽऽऽ ये चिपकी फिर से आ गई!'' और भागकर दूर हट जाती है। बेला मुझे प्यार करती है, शायद। मेरी उससे रोज़ मुलाक़ात होती है। जब वह रात में पढ़ाई के लिए बैठती है, तो मुझे बहुत अच्छा लगता है। रात में मेरे खाने का समय होता है। मैं दीवारों पर लपक–लपक कर कीड़े–मकौड़े खाती रहती हूँ और बेला रहती है पढ़ाई में मस्त! मैं बहुत से मच्छर भी निगल लेती हूँ। ताकि बेला मच्छरों की खुजलाहट से बची रहे। जब मेरा पेट भर जाता है तो चुपचाप एक कोने में चिपक जाती हूँ।

रात का खाना खाने के बाद बेला के पापा उसे गणित के सवाल हल करने को देते हैं। मैं दीवार से झाँककर उसे देखती रहती हूँ। बेला जब सवालों के सही जवाब देती है, तब बोल देती हूँ, "ठीक है, ठीक है, ठीक है...।'' और जब ग़लत जवाब देती है तब...? नहीं– नहीं, ये मैं नहीं बताऊँगी! बेला आख़िर दोस्त है मेरी...!"

Writer : Malini Mukherjee
Translators : Soumitra, Saira
Illustrator : Hariom Patidar

चिपकी

1. चिपकी कौन है और वह क्या–क्या खाती है ?

2. बेला की मम्मी चिपकी से क्यों डरती हैं ?

3. चिपकी के रहने से बेला और उसकी मम्मी को कोई फ़ायदा था या नहीं ? अगर हाँ तो कैसे ? नहीं तो क्यों ?

4. ऐसे कीड़े–मकौड़ों की सूची बनाइए जिनसे आपको डर लगता है ?

5. आपको कौन–सा विषय पढ़ने में मज़ा आता है और क्यों?

टिफ़िन बॉक्स

पिंकू मुझे बहुत प्यार करती है। जब वह स्कूल जाती है, तब उसकी मम्मी मेरे पेट में पूड़ी और आलू की सब्ज़ी, रोटी और गुड़ रख देती हैं। कभी–कभी नारियल के लड्डू भी रख देती हैं। ये सब पिंकू को बहुत पसंद है।

स्कूल में मेरे और भी दोस्त हैं। लंच के समय सभी के पास लज़ीज़ खाना होता है, जिसे पिंकू के दोस्त मिलजुल कर खाते हैं।

घर लौटते समय पिंकू कभी–कभी मेरे पेट में कंकड़, फूल, पत्ते और टिड्डे भर लाती है। इससे मुझे बहुत गुदगुदी होती है।

पर आजकल मैं बहुत उदास हूँ! पिंकू की मम्मी ने बहुत दिनों से मेरे पेट में खाने–पीने का कोई भी सामान नहीं रखा! अब मेरे पेट में सिर्फ़ पेंसिल, रबड़, कटर और रंग ही होते हैं।

कई महीनों तक पिंकू मुझे स्कूल भी नहीं ले गई... लेकिन अब स्कूल खुल गए हैं। फिर से मेरा पेट लज़ीज़ पकवान से भरा रहेगा।

Writer : Malini Mukherjee
Translators : Soumitra, Saira
Illustrator : Hariom Patidar

टिफ़िन बॉक्स

1. यह कहानी किसके बारे में है?

2. पिंकू को खाने में क्या–क्या पसंद था ?

3. घर लौटते समय पिंकू क्या–क्या भर कर लाती थी ?

4. आपको खाने में कौन कौन सी चीज़ें पसंद हैं ? उनके नाम लिखिए।

5. अपने किसी भी पसंदीदा खाने की विधि लिखिए।

फ़ुटबॉल

रेहाना के घर के पास बाज़ार लगा है। वह अपने भाई राशिद से कहती है, "भैया, कुछ लेकर आते हैं।" राशिद तैयार हो गया। दोनों दादी जी के पास पहुँचे। दादी जी ने उनसे पूछा, "क्या लाओगे तुम दोनों?"

राशिद बोला, "दादी जी, मुझे मोटर कार पसंद है। मैं मोटर कार ही लूँगा। रेहाना को गुड़िया पसंद है तो इसके लिए गुड़िया ही लेंगे।" "तुम्हें कैसे पता कि मैं गुड़िया ही लूँगी?" रिहाना ने पूछा। "क्योंकि तुम गुड़िया हो। लड़कियाँ गुड़ियों से ही खेलती हैं।" राशिद ने कहा। "ऐसे तो तुम गुड्डे हो और तुम्हें गुड्डे से ही खेलना चाहिए।" रेहाना ने कहा। राशिद को कुछ समझ में नहीं आया कि क्या कहे। उसने इतना ही कहा, "तो फिर तुम क्या लोगी?"

"मैं लूँगी फ़ुटबॉल।" कहते हुए रेहाना ने पाँव से हवा में किक लगाई और ऊपर देखा। दादी जी मुस्कराई। फिर उन्होंने दोनों को उनकी पसंद के सामान ख़रीदने के लिए पैसे दिए।

Writer : Komal

Illustrator : Sushanto

फ़ुटबॉल

1. रेहाना और राशिद दादी जी के पास क्यों गए थे ?

2. रेहाना ने राशिद को क्यों कहा कि वह फ़ुटबॉल खेलेगी ?

3. ऐसे खेलों के नाम बताइए जिन्हें बॉल की मदद से खेला जाता है ?

4. जिन बच्चों के पास खिलौने नहीं होते वे किस तरह के खेल खेलते होंगे ? सोचिए और लिखिए ?

5. बच्चों को खेलना क्यों ज़रूरी है ? लिखिए।

सपनों की उड़ान

रूही के स्कूल में गर्मियों की छुट्टियाँ पड़ गई थीं। रूही बहुत ख़ुश थी। उसकी मौसी मुंबई में रहती थीं। रूही अपने परिवार के साथ हवाई जहाज़ से मुंबई जाने वाली थी। सारी तैयारियाँ हो चुकी थीं। वह पहली बार हवाई यात्रा करने जा रही थी।

माँ ने कहा, "रूही, सो जाओ। सुबह जल्दी जाना है।"

रूही को रात में सपना आया। उसने देखा कि वह हवाई जहाज़ में बैठी हुई है। जहाज़ उड़ने की तैयारी में है। उसने धीरे–धीरे चलना शुरू किया। फिर तेज़ी से दौड़ने लगा। तेज़ आवाज़ कानों में गूँजने लगी। जहाज़ उड़ान भरने ही वाला था कि अचानक! ज़ोर का झटका लगा। वह हड़बड़ाकर उठ बैठी। सामने माँ खड़ी थीं वह रूही को जगा रही थी, "चलो रूही, जल्दी उठो। जाना है कि नहीं?"

रूही आँखें मलते हुए बोली, "क्या हम जहाज़ में बैठ गए?"

माँ ने हँसते हुए कहा, "सपनों की उड़ान छोड़ो। असली दुनिया की उड़ान अब भरनी है।" रूही उठी और मुँह–हाथ धोने चली गई।

Writer : Naresh Babu

Illustrator : Habib Ali

सपनों की उड़ान

1. रूही किसके साथ कहाँ जाने वाली थी ?

2. रूही ने सपने में क्या देखा ?

3. "असली दुनियाँ की उड़ान अभी बाकी है" माँ ने ऐसा क्यों कहा?

4. छुट्टियाँ होने पर आप क्या–क्या करते हैं ? लिखिए।

5. अपनी सबसे मज़ेदार यात्रा के बारे में लिखिए?

मिट्टी का हाथी

दयालबाग कुम्हार हैं। जब वे बरतन बनाते हैं, तो उनकी बेटी सोनी भी मदद करती है।

एक दिन सोनी अपने छोटे भाई राजू के साथ खेल रही थी। तब दयालबाग ने मिट्टी का हाथी बनाया। खेल–खेल में राजू का हाथ हाथी की सूँड़ पर लग गया। हाथी गिरकर टूट गया। राजू के साथ–साथ सोनी भी रोने लगी। माँ ने दोनों को समझाया।

राजू तो चुप हो गया, लेकिन सोनी रोती ही रही और रोते–रोते सो गई।

वह सुबह उठी तो हैरान थी। हाथी सामने खड़ा था। हाथी के साथ एक घोड़ा और ऊँट भी था। उसने माँ से पूछा, "ये सब कहाँ से आए?"

माँ ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "आए नहीं हैं। तुम्हारे बाबा ने इन्हें बड़ी मेहनत से बनाए हैं।"

सोनी दौड़कर बाबा से लिपट गई, "आपने मेरे लिए इतनी मेहनत क्यों की बाबा!"

"दिल टूटना, खिलौने के टूटने से बड़ा होता है मेरी बच्ची!"

Writer : Deepak Kumar, Koshambi

Illustrator : Subham Lakhera

मिट्टी का हाथी

1. सोनी पिता के किस काम में मदद करती थी?

2. सोनी क्यों रोने लगी?

3. माँ ने सोनी और राजू को क्या समझाया होगा ?

4. आपने मिट्टी से बनी कौन–कौन सी चीज़ें देखी हैं? सूची बनाइए।

5. मिट्टी से बने बर्तन से क्या क्या फ़ायदे हैं ? चर्चा करके लिखिए।

पैरों की छाप

जोजो बरामदे में बैठा हुआ था। उसके सामने एक किताब थी। किताब पर लिखा था 'बाघ की कहानी'। जोजो किताब पर बने बाघ के चित्र को ग़ौर से देखने लगा। जैसे ही उसने अपना सिर उठाया, सामने एक बाघ खड़ा था। बाघ को देखकर जोजो बहुत ख़ुश हुआ। उसने जल्दी से किताब उठाई और बाघ को दिखाई।

किताब में अपना चित्र देखकर बाघ बहुत ख़ुश हुआ। दोनों ने ढेर सारी बातें कीं। बाघ ने जंगल की कुछ ऐसी बातें भी बताईं, जो उसे नहीं मालूम थीं। जोजो ने आँखें बंद की और बाघ चला गया। जाने से पहले वह जोजो की किताब में अपने पंजों की छाप छोड़ गया था।

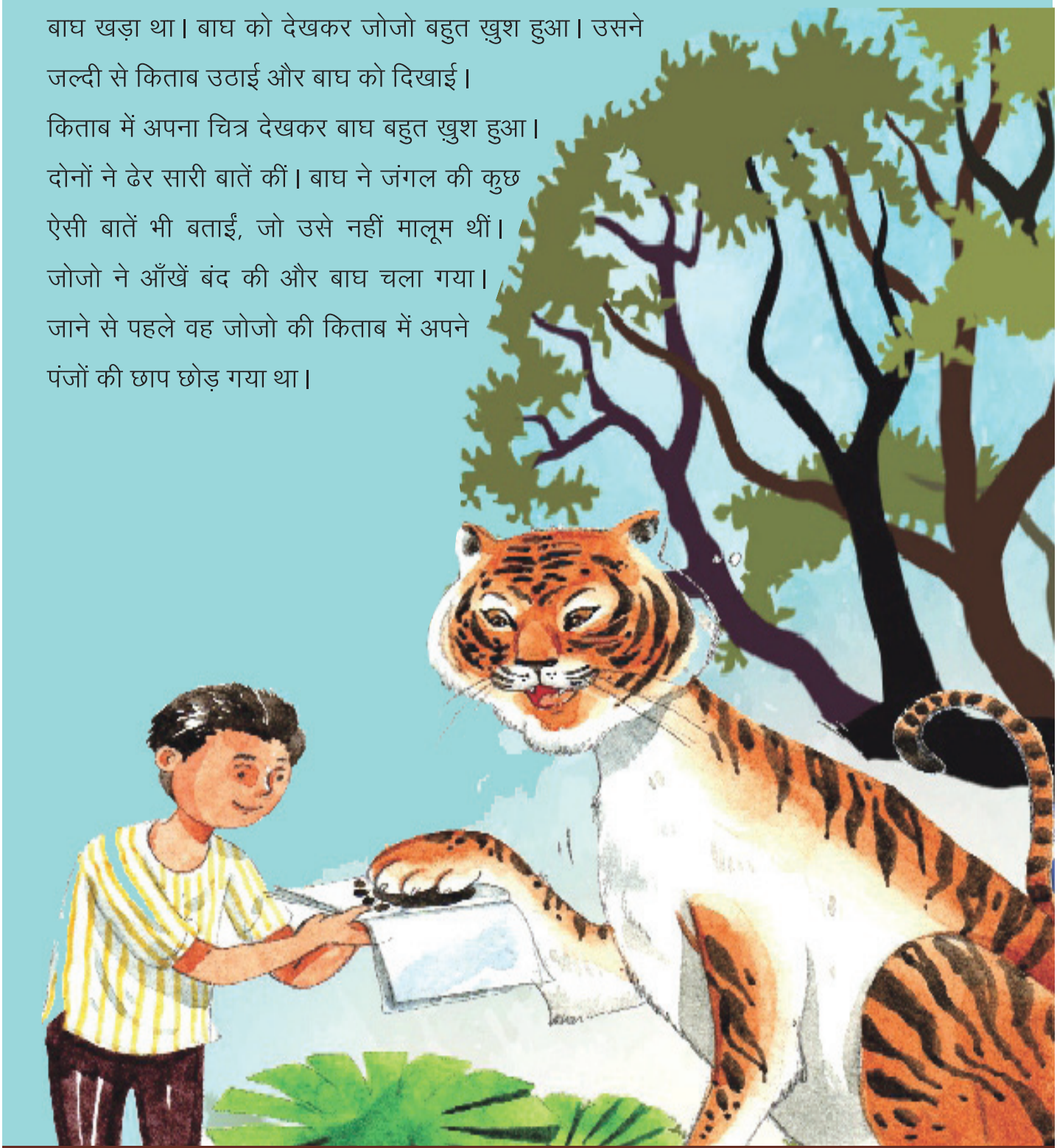

Writer : Saumitro Translator : Saira Bano Illustrator : Subham Lakhera

पैरों की छाप

1. जोजो के सामने रखी किताब पर क्या लिखा था ?

2. बाघ के सामने आने पर क्या–क्या हुआ ?

3. बाघ ने जोजो को जंगल के बारे में क्या–क्या बातें बताई होंगी ?

4. अगर आप किसी जंगल में जाएँ तो वहाँ क्या–क्या देखने को मिलेगा ? सोचकर लिखिए।

5. अपने मनपसंद जानवर के बारे में कुछ ख़ास बातें लिखिए।

तेज़ गिलहरी

एक पेड़ की कोटर में रहती है एक गिलहरी। गिलहरी है बड़ी चालाक और फुर्तीली। उसे आँगन के कोने में दिखा एक ऊन का गोला। उसने सोचा क्यों न उठा ले आऊँ इसे और नर्म–मुलायम बिस्तर बनाऊँ बच्चों के लिए।

उसने इधर–उधर नज़रें दौड़ाईं। उसे गोले के आस–पास नहीं दिया कोई दिखाई। दबे पावों, बचते–बचाते वह ऊन के गोले के पास पहुँची।

झबरू भी दरवाज़े की आड़ में ताक लगाए बैठा था। गिलहरी ने ऊन का गोला मुँह में जैसे ही पकड़ा, झबरू भी पीछे से उसे पकड़ने दौड़ा।

गिलहरी ऊन का गोला मुँह में दबा कर भागी। झबरू भी उसके पीछे भागा। गिलहरी आगे–आगे, झबरू उसके पीछे–पीछे। गिलहरी को अपनी जान बचाने की फ़िक्र थी। उधर झबरू को अपनी शान बचाने की फ़िक्र थी।

भागते हुए गिलहरी को लगा अब जान नहीं बचेगी। झबरू को लगा आज नर्म–नर्म डिश नहीं मिलेगी। पर तेज़ फुर्तीली गिलहरी पकड़ ली पेड़ की ऊँची डाल। झबरू का ग़ुस्से से हो गया मुँह लाल।

गिलहरी निकली कुत्ते से तेज़, झबरू हो गया मटियामेट।

Writer : Amritlal Yadav

Illustrator : Mitrarun Halder

तेज़ गिलहरी

1. गिलहरी कहाँ रहती थी ?

2. गिलहरी ऊन का गोला क्यों लेना चाहती थी ?

3. झबरू गिलहरी को क्यों नहीं पकड़ पाया ?

4. अगर आप झबरू की जगह पर होते तो गिलहरी को पकड़ने के लिए क्या–क्या करते ?

5. गिलहरी के बारे में कोई पाँच बातें लिखिए ?

आँगन में पेड़

सुबह का समय था। सूरज की लालिमा चारों तरफ़ फैलने लगी थी। बच्चों की टोली उछल–कूद करती जा रही थी। टोली के पीछे एक बच्चा साथ चलने की कोशिश कर रहा था, लेकिन साथ नहीं पकड़ पा रहा था।

तभी टोली से एक बच्चा बोला, "जल्दी चलो, देर हो जाएगी।"

दूसरे बच्चे ने भी 'हाँ' में 'हाँ' भरी। बोला, "डाँट पड़ेगी। जल्दी चलो।"

सभी बच्चे तेज़ी से आगे बढ़ने लगे। कुछ भागने भी लगे। पीछे चलने वाले बच्चे ने भी चाल बढ़ा दी।

कुछ ही देर में सभी बच्चे एक जगह पर पहुँच गए। जहाँ दूर–दूर तक कोई पेड़ नहीं था। सभी ने एक–एक पौधा उठाया और वृक्षारोपण करने लगे।

अध्यापकों ने भी पौधे लगाए।

तब साथ आए एक अधिकारी ने बच्चों को 10–10 रुपये इनाम में दिए और कहा, "ये सुबह–सुबह एक अच्छा काम करने का इनाम है।''

टोली के पीछे चलने वाला बच्चा खड़ा रहा। वह बोला, "मुझे पैसे मत दीजिए।"

अधिकारी ने प्यार से पूछा, "लेकिन क्यों?"

बच्चे ने कहा, "मुझे पैसे के बदले एक पौधा दे दीजिए। मैं आँगन में लगाऊँगा।"

अधिकारी ने ख़ुशी से बच्चे को पैसे व पौधा दोनों दिए और कहा, "तुम्हारी भावनाएँ अच्छी हैं, इसलिए यह पुरस्कार और पौधा दोनों तुम्हारे लिए हैं।"

बच्चा ख़ुशी से झूम उठा।

Writer : Mukesh Pratap Singh

Illustrator : Partho Sen Gupta

आँगन में पेड़

1. सुबह–सुबह बच्चों की टोली कहाँ जा रही थी ?

2. अधिकारी ने बच्चों को इनाम क्यों दिया था ?

3. आपके अनुसार अधिकारी क्या–क्या काम करते होंगे ? लिखिए।

4. इनाम शब्द सुनकर आपके मन में जो शब्द आ रहे हैं वे लिखिए ।

5. अगर आपको अपने घर के आँगन में कोई पौधा लगाना हो तो कौन–सा पौधा लगाएँगे और क्यों ? लिखिए।

तारे

गर्मी का मौसम था। रात को मुन्ना अपनी माँ के साथ छत पर लेटा था। उसे नींद नहीं आ रही थी। वह एकटक आसमान की ओर देख रहा था।

"माँ, क्या आप मेरे लिए तारे लाएँगी?" उसने माँ से कहा।

"नहीं बेटा तारे हम से बहुत दूर हैं और ये बहुत बड़े होते हैं।" माँ ने जवाब दिया।

"कितने बड़े?"

"बहुत बड़े!"

"आपसे भी बड़े?"

"हाँ!"

"हमारे घर से भी बड़े?"

"हाँ मुन्ना, कुछ तारे तो हमारी धरती से भी बड़े होते हैं।"

तभी एक तारा तेज़ी से चमका। मुन्ना चौंककर बोला, "माँ, उस तारे को कुछ हो गया है?"

"वह तारा टूट रहा है, मुन्ना।"

"यह टूटकर कहाँ गिरेगा?"

"धरती पर।" माँ ने कहा "आपने कहा ये धरती से बड़े होते हैं, तो क्या अब हम इसके नीचे दब जाएँगे?" मुन्ना घबरा गया। माँ के पास कोई जवाब नहीं था। माँ ने मुन्ने को अपने सीने से लगा लिया और बोली, "तुम बहुत सवाल पूछते हो मुन्ना। अब सो जाओ।" मुन्ना फिर से तारों को देखने लगा।

Writer : Bharat Sharma

Illustrator : Khushi Chauhan

तारे

1. मुन्ना छत पर क्या कर रहा था ?

2. आसमान में आपने क्या –क्या देखा है ? इसकी एक सूची बनाइए।

3. मुन्ना क्यों घबरा गया था ?

4. आप तारों के बारें में क्या –क्या जानते हैं ? लिखिए।

5. तारे जो टूटते हैं, उन्हें क्या कहा जाता है, और ऐसा क्यों होता है ? चर्चा करके लिखिए।

ब्लैकबोर्ड और डस्टर

अँधेरे, सीलन भरे कमरे में एक ब्लैकबोर्ड और एक डस्टर एक दूसरे से बातें कर रहे थे। डस्टर ने ब्लैकबोर्ड से कहा, "मुझे लगता है कि हम दोनों हमेशा के लिए इस अँधेरे कमरे में रहेंगे।"

ब्लैकबोर्ड ने एक गहरी साँस ली और जवाब दिया, "हाँ, भाई। मुझे भी ऐसा ही लगता है। मुझे डर है कि एक दिन यह सीलन हमें खा जाएगी।"

डस्टर ने शिकायत की, "हाँ, दोस्त! वे तुम्हें अक्सर रँगते थे, और मैं तुम्हें साफ़ करता था। हम बहुत कुछ करते थे जब यह एक डिजिटल बोर्ड नहीं था।"

"सौ प्रतिशत सही कहा तुमने," ब्लैकबोर्ड ने कहा।

ऊपर के कमरे में शिक्षक अपने छात्रों को पढ़ाने में व्यस्त थे। वे डिजिटल बोर्ड का उपयोग कर रहे थे। अचानक! बिजली चली गई। अब क्या करें? तभी सबको याद आ गया। शिक्षक ने स्टोर रूम को खोला और ब्लैकबोर्ड और डस्टर वापस कक्षा में ले आए। ब्लैकबोर्ड और डस्टर ने खुली हवा में लंबी साँसें लीं, "पुराना हमेशा शुद्ध सोना होता है," उन्होंने एक दूसरे से कहा।

Writer : Shiv, Navdeep, Tripta Thakur
Translator : Saira Bano
Illustrator : Partho Sen Gupta

ब्लैक बोर्ड और डस्टर

1. ब्लैक बोर्ड और डस्टर आपस में एक दूसरे से क्या बातें कर थे?

2. आपकी नज़र में ब्लैक बोर्ड और डस्टर की हालत का ज़िम्मेदार कौन था और क्यों ?

3. बिजली जाने के बाद स्कूल में क्या हुआ ?

4. डिजिटल बोर्ड के बारे में आप क्या जानते हैं ? आपस में चर्चा करें और लिखिए ?

5. "पुराना हमेशा शुद्ध सोना होता" I ब्लैकबोर्ड और डस्टर ने ऐसा क्यों बोला?

मिलकर रहना अच्छा

एक बाग़ था। उसमें आम और अंजीर के पेड़ थे। बच्चे हर रोज़ बाग़ में खेलने जाते। वे आम के पेड़ पर चढ़ते और ख़ूब मस्ती करते। रसीले आम भी तोड़कर खाते। अंजीर का पेड़ छोटा था। उसे आम की खुशहाली देखकर बहुत कुढ़न होती। वह बात–बात पर चिढ़ जाता। यही कारण था कि उस पर न तो कोई चढ़ता था और न ही कोई पक्षी उस पर अपना घोंसला ही बनाता था। अंजीर के फल पकते और गिर जाते। बच्चों ने उसे भुला दिया था।

एक दिन मधुमक्खियों का एक झुण्ड आया। उन्हें अंजीर का पेड़ बहुत पसंद आया। रानी मक्खी ने अंजीर के पेड़ पर छत्ता बनाने की योजना बनाई। लेकिन अंजीर ने कहा, "ख़बरदार! जो तुम सब मेरे पास आईं।" मधुमक्खियों ने अपना छत्ता आम के पेड़ पर बनाना चाहा, तो आम ने उनका भरपूर स्वागत किया।

कुछ दिन बाद एक लकड़हारा आया। वह आम का पेड़ काटने लगा, लेकिन मधुमक्खियाँ तो उसकी मित्र थीं, उन्होंने भिन–भिनाकर लकड़हारे को भगा दिया। जब लकड़हारे की नज़र अंजीर के पेड़ पर पड़ी तो वह खुश हो गया, क्योंकि उस पर कोई भी छत्ता नहीं था। लकड़हारा अंजीर का पेड़ काटने लगा। पेड़ दर्द से कराह उठा। उसने मदद माँगी, लेकिन मधुमक्खियों ने इनकार कर दिया।

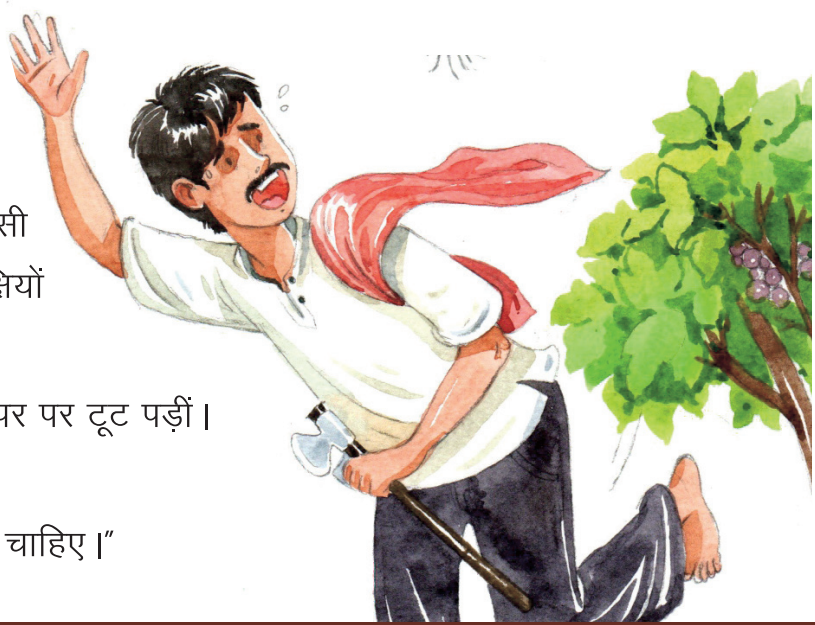

तब आम ने कहा, "अंजीर भी हमारा पड़ोसी दोस्त है। उसके पके फल बहुत से पशु–पक्षियों के काम आते हैं।"

बस फिर क्या था! मधुमक्खियाँ लकड़हारे पर पर टूट पड़ीं। लकड़हारा भाग गया।

अंजीर ने सोचा, "हम सब को मिलकर रहना चाहिए।"

Writer : Babita Varma, Pratapgarh

Illustrator : Subham Lakhera

मिलकर रहना अच्छा

1. बच्चों ने अंजीर के पेड़ को क्यों भूला दिया था ?

2. मधुमक्खियों ने आम के पेड़ की मदद कैसे की ?

3. जब मधुमक्खियों ने अंजीर की मदद करने से इनकार कर दिया तो आम ने क्या कहा ?

4. मधुमक्खियाँ शब्द पढ़कर आपके मन में जो शब्द आ रहे हैं उन्हें लिखिए।

5. "हम सब को मिलकर रहना चाहिए।" आपके अनुसार क्या यह सही है ? यदि हाँ तो क्यों ? नहीं तो क्यों ?

तेरा आसमान

छुटकी पिछले दो सालों से स्कूल नहीं गई थी। वह घर में रहती थी। घर में मम्मी–पापा और दादी उसके साथ खेलते थे। खेलने में उसे बहुत मज़ा आता था।

लेकिन अक्सर छुटकी को अपने स्कूल और दोस्तों की बहुत याद आती थी। मम्मी उसे समझातीं, "कोरोना के कारण सबको घर में रहना पड़ रहा है। मगर जल्दी ही सब ठीक हो जाएगा। तुम भी स्कूल जाने लगोगी और अपने दोस्तों से मिलोगी।"

शाम का समय था। छुटकी अपनी छत पर पतंग उड़ा थी। हवा भी अच्छी चल रही थी। थोड़ी ही देर में पतंग बहुत ऊपर चली गई। चरखी से माँझा ख़त्म हो गया और छुटकी के हाथ से छूट गया। पतंग मुस्कराते हुए बोली, "अच्छा दोस्त, मैं तो चली खुले आसमान की सैर करने!"

छुटकी उदास होकर एक कोने में बैठ गई।

अचानक! उसकी आँख खुल गई। उसने अपने को बिस्तर पर पाया। वह उठकर आँगन में आ गई। तभी उसकी नज़र पिंजरे पर पड़ी। पिंजरे में छोटी–सी गौरैया उदास बैठी थी।

पापा इसे छुटकी के जन्मदिन पर लाए थे। छुटकी पिंजरे के पास गई। उसने गौरैया को ध्यान से देखा। फिर उसने पिंजरे का दरवाज़ा खोल दिया और बोली, "जा छुटकी, तू भी पतंग की तरह खुले आसमान में उड़ जा। मैं तुझे भी तेरा आसमान लौटा रही हूँ!"

Writer : Utpal Mukhopadhyay Translators : Soumitra, Saira Illustrator : Susanta Das

तेरा आसमान

1. कोरोना के समय छुटकी घर पर क्या करती थी ?

2. छुटकी सपने में क्या कर रही थी?

3. छुटकी ने गौरैया को पिंजरे से आज़ाद क्यों किया? सोचिए और लिखिए।

4. कोरोना के समय आपके आसपास क्या–क्या हो रहा था ? आपस में चर्चा कीजिए और लिखिए।

5. आपके अनुसार किसी भी पक्षी को पालना या पिंजरे में रखना सही है या नहीं ? लिखकर समझाइए।

हमारा संगीत

एक दिन की बात है। कप और प्लेट मेज़ के एक कोने में सो रहे थे।

अचानक! चम्मच की खटपट से उनकी नींद टूट गई। नींद टूटते ही वे चिल्लाए, ''तुम्हें दिखता नहीं, हम सो रहे हैं।"

चम्मच मायूसी से बोला, "दोस्त, मैं क्या करूँ। जब जिसका मन करता है, मुझे इधर से उधर पटक देता है। मैं अपना दर्द किससे कहूँ? मेरा दर्द समझने वाला तो कोई भी नहीं है।"

कप और प्लेट को लगा कि वह सही बात कह रहा है। वे भी बोल उठे, "सही कहा, हमारा दर्द भी कम नहीं है। अचानक! हमारे ऊपर गर्म पानी डाल दिया जाता है। कभी–कभी तो उफ़! ठंडा पानी भी डाल देते हैं लोग। तुम भी तो हमारा हाल समझने की कोशिश करो।"

दोनों की बातें सुनकर मेज़ से भी नहीं रहा गया। वह बोली, "तुम सभी लोग हर वक्त मुझ पर सवार रहते हो। मेरा क्या हाल होता होगा, ये तुम लोगों को क्या पता? यह तो सही नहीं है। इसका कुछ तो हल निकलना चाहिए!"

चम्मच, कप और प्लेट मिलकर शोर मचाने लगे, "हमें इंसाफ़ चाहिए, हमें इंसाफ़ चाहिए।"

तभी मालकिन किसी कारीगर को लेकर आ गईं, "ज़रा देखो तो सही, ये मेज़ कई दिनों से डगमगा रही है, इसे सही कर दो, वरना सारे बर्तन गिर जाएँगे।"

कारीगर ने बेचारी मेज़ की पीठ पर दो कीलें ठोंक दीं। मेज़ थर्राकर रह गई।

उसके जाते ही मेज़ ने रोनी सूरत बनाकर कहा, "अब बताओ, किसका दुख ज़्यादा है।"

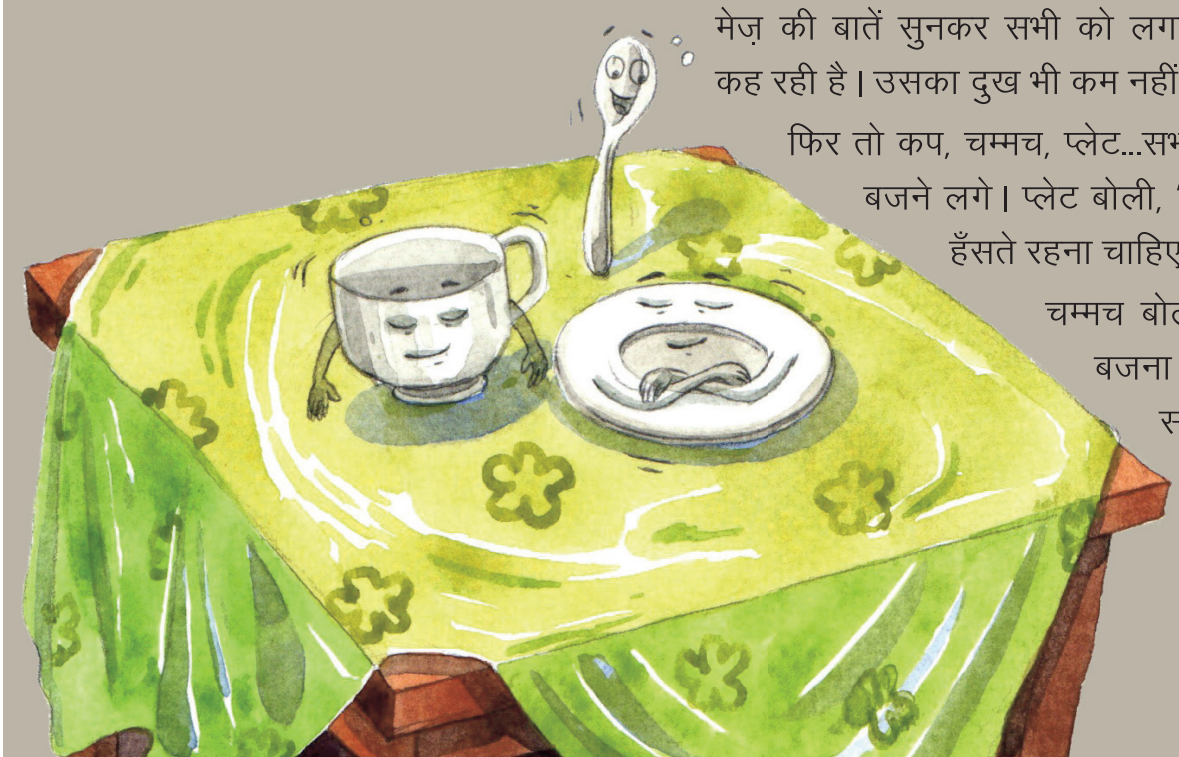

मेज़ की बातें सुनकर सभी को लगा कि वह सही कह रही है। उसका दुख भी कम नहीं है।

फिर तो कप, चम्मच, प्लेट...सभी खनखनाकर बजने लगे। प्लेट बोली, "हमें दुख में भी हँसते रहना चाहिए।"

चम्मच बोला, "हमारा बजना ही तो हमारा संगीत है।"

Writer : Soumitro
Translator : Saira Bano
Illustrator : Shubham Lakhera

हमारा संगीत

1. कप और प्लेट का दर्द क्या था ?

2. कारीगर ने मेज़ की पीठ पर कीलें क्यों ठोक दी ?

3. "हमें इंसाफ़ चाहिए, हमें इंसाफ़ चाहिए" । चम्मच, कप और प्लेट ने यह बात किससे कही होगी और क्यों?

4. इंसाफ़ शब्द का क्या अर्थ है ? इस शब्द का प्रयोग करते हुए तीन वाक्य बनाइए ।

5. यदि कहानी में तवा होता तो वह अपने बारे में क्या बातें करता ?

एक नई सुबह

भोर का समय था। सूरज की लालिमा चारों तरफ़ फैली थी। हमारी टोली के सभी लड़के–लड़कियाँ उछल–कूद करते जा रहे थे। कोई आगे निकल जाता तो कोई पीछे रह जाता था। सभी एक–दूसरे से आगे निकलना चाहते थे। टोली के पीछे अभय साथ चलने की कोशिश कर रहा था, लेकिन साथ नहीं पकड़ पा रहा था। उसे अपनी बैसाखी के सहारे चलना पड़ रहा था। तभी राकेश बोला, "जल्दी चलो, देर हो जाएगी।" उसने 'हाँ' में 'हाँ' भरी और बैसाखी को तेज़–तेज़ बढ़ाना शुरू कर दिया। अब हमारी टोली एक साथ एक चाल से बढ़ी जा रही थी। कुछ ही समय में हम सब खेत पर पहुँच गए।

दादा जी हमारा ही इंतज़ार कर रहे थे। उनको हमारी मदद की ज़रूरत थी और हमें एक नए तरह के काम में शामिल होने की खुशी हो रही थी। दादा जी इशारा करके बोले, "वह देखो मेंड़ पर पौधे रखे हैं। ये सभी पौधे गड्ढों में रोपने हैं।" तभी रमन ने कहा, "मैं यहाँ से एक–एक पौधा उठा उठाकर देने का काम करूँगा।" वह हमें पौधा देता जाता। हम सभी पौधों को गड्ढों तक पहुँचाते। पौधों के लिए गड्ढे दादा जी ने पहले से तैयार किए हुए थे। कुछ ही देर में सारे पौधे अपनी जगहों पर पहुँच गए। हम में से हरेक एक–एक गड्ढे में पौधा रोप रहा था। उसमें खाद मिट्टी भर रहा था। दादा जी बाल्टी से हरेक पौधे में पानी देते जा रहे थे। भोर की लाली की जगह अब धूप खिल गई थी। खिली हुई धूप में नए लगे पौधे चमक रहे थे। उन्हें देखकर हमारी और दादा जी की आँखें भी खुशी से चमक रही थीं।

Writer : Mukesh Pratap Singh

Illustrator : Sushanto

एक नई सुबह

1. अभय टोली के बाकी बच्चों का साथ क्यों नहीं पकड़ पा रहा था?

2. बच्चों ने खेत में क्या–क्या काम किया?

3. दादा जी की आँखें ख़ुशी से क्यों चमक उठीं?

4. पौधा रोपने के लिए क्या–क्या किया जाता है? किसी से पता कीजिए और लिखिए?

5. आपने कभी–न–कभी किसी की मदद ज़रूर की होगी, कब और कैसे? लिखिए।

कचरे का बादल

चीकू का कोई दोस्त नहीं था। चीकू के साथ कोई खेलना नहीं चाहता था, क्योंकि उसके सिर पर हमेशा एक बादल मँडराता रहता। कचरे से भरा एक बादल।

एक दिन वह सोना से बोली, "हम साथ–साथ स्कूल चलते हैं" सोना फ़ौरन दूर भाग गई। "क्या मैं तुम्हारा पेंसिल शार्पनर इस्तेमाल कर लूँ?" उसने स्वीटी से पूछा। स्वीटी मुँह बनाते हुए चली गई। अम्मा हमेशा उसे कूड़ा फैलाने से मना करती थीं। "सड़क पर केले का छिलका मत फेंको। बिस्कुट के ख़ाली लिफ़ाफ़े कूड़ेदान में डालो।" लेकिन चीकू ने उनकी बात नहीं मानी। एक दिन अम्मा ग़ुस्से से बोली, "देखना अब यह कूड़ा हमेशा तुम्हारे साथ ही रहेगा!"

अगले दिन जब चीकू सो कर उठी तो चारों तरफ़ मक्खियाँ भिनभिना रही थीं। साथ ही, सिर पर कचरे का बादल मँडरा रहा था। अम्मा की बात सच साबित हुई।

इसके बाद चीकू ने बाला को देखा सड़क पर केले का छिल्का फेंकते हुए। चीकू चिल्लाई, "अरे! बुद्धु, छिल्के को सड़क पर मत फेंको, कोई फ़िसल जाएगा।"

बाला ने, छिल्के को कूड़ेदान में फेंक दिया। अगले दिन, कचरे का वह बादल थोड़ा–सा छोटा हो गया। चीकू ने सोचा, "अरे ऐसा कैसे हुआ?" फिर चीकू ने देखा कि रमा आंटी, प्लास्टिक की थैलियों को फेंक रही थीं। चीकू ने कहा, "आंटी, थैलियों को उठाकर दोबारा इस्तेमाल कीजिए।" रमा आंटी थैली उठाकर वहाँ से चली गई! अगले दिन जब चीकू सोकर उठी तो बादल और भी छोटा हो गया था। चीकू मुस्कुराई, वह समझ गई थी कि उसे क्या करना है।

फिर जब भी कोई बिस्कुट का पैकेट, लिफ़ाफ़ा या पेंसिल की छीलन फेंकता चीकू उसे रोक देती। बेकार चीज़ें उठाकर कूड़ेदान में डाल देती। अब गाँव और ज़्यादा साफ़ रहने लगा। चीकू का बादल और छोटा होने लगा। फिर एक दिन वह ग़ायब हो गया। और चीकू शायद दुनिया की सबसे ख़ुश लड़की हो गई। उसके बाद चीकू ने कूड़ा नहीं फैलाया।

Writer : Karanjeet Kaur Translator : Poonam S. Kudesia Illustrator : Bhavana Vyas Vipparthi

कचरे का बादल

1. चीकू के सिर पर कचरे का बादल क्यों मडराता रहता था ?

2. कचरे का बादल कैसे गायब हो गया ?

3. सूखे कचरे और गीले कचरे के पाँच–पाँच उदाहरण लिखिए।

4. आपके घर में किन–किन चीज़ों से कचरा बनता है और उसे कम करने के लिए आप क्या–क्या करते हैं ?

5. आसपास सफ़ाई रखना क्यों ज़रूरी है? लिखिए।

गणित की कॉपी

रोज़ की तरह माँ ने दलजीत को आवाज़ लगाई। दलजीत अभी भी बिस्तर में ही थी। आज उसका स्कूल जाने का मन नहीं था। तभी माँ को बस के हॉर्न की आवाज़ सुनाई दी। माँ ने ऊँची आवाज़ में कहा, "दलजीत क्या तुम्हें आज स्कूल नहीं जाना?" दलजीत ने बिस्तर में लेटे–लेटे ही कहा, "माँ आज मेरा स्कूल जाने का मन नहीं है।" माँ दूसरा सवाल पूछ पाती उससे पहले ही स्कूल की बस दो बार हॉर्न बजाकर जा चुकी थी।

लगभग दो घंटे के बाद जब दलजीत सोकर उठी, तो वह बहुत उदास थी। माँ उसके पास गई। पर दलजीत आँखें मूँदे पड़ी रही। कुछ देर तक उसने किसी से बात तक नहीं की। माँ ने दलजीत से नाश्ता करने के लिए कहा, लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया। सुबह से दोपहर हो गई। इस बार माँ ने दलजीत से कहा, "तुम स्कूल तो नहीं गई, लेकिन अपना होमवर्क तो पूरा कर लो।" दलजीत चुप रही, मानो उसने कुछ सुना ही न हो। चुपचाप अपने कमरे में जाकर उसने अपना बैग खोला। बैग से गणित की कॉपी निकाली। कुछ पन्नों को पलटा। एक पन्ने पर स्टार बना हुआ था। दूसरे पन्ने पर एक छोटा–सा मुस्कराता चेहरा बना हुआ था, कहीं–कहीं ग़लती करने पर गोले भी बने हुए थे। कॉपी के आख़िरी पन्ने पर नीलम मैडम के हस्ताक्षर थे। दलजीत ने नीलम मैडम के नाम पर प्यार से हाथ फेरा। आज से उसकी सबसे प्यारी टीचर उसे स्कूल में नहीं दिखेंगी... दलजीत की आँख से एक आँसू गिरा और उसने कॉपी बंद करके गले से लगा लिया।

Writer : Surjeet, Daljeet, Meena Sharma, Dharam Vir

Illustrator : Habib Ali

गणित की कॉपी

1. माँ ने दलजीत को आवाज़ क्यों लगाई ?

2. गणित की कॉपी के साथ दलजीत ने क्या किया ?

3. दलजीत की उदासी का क्या कारण था ?

4. आप स्कूल में पढ़ने के अलावा और कौन–कौन सी गतिविधियाँ करते हैं ?

5. आपके पसंदीदा टीचर कौन हैं और क्यों ?

शरारत की पुड़िया

मैं आज अपने घर लौटा तो घर की हालत देखकर मेरा सिर चकरा गया। मेज़ पर किताबें उल्टी–पुल्टी रखी थीं। कुशन जो सोफ़े पर रहता था, वह ज़मीन पर गिरा हुआ था। कुशन के हाथ–पैर तो होते नहीं, जो ख़ुद नीचे गिर जाए? ज़रूर यहाँ कोई आया है और जान बूझकर ऐसा किया है।

घर के लोग बुआ की बेटी की शादी की तैयारियों में लगे हुए हैं। उन्होंने इस बात पर ध्यान भी नहीं दिया होगा कि घर कितना बिखरा हुआ है। अब इस बात का पता मुझे ही लगाना होगा कि ये सब किस की हरकत है! मेरे दिमाग़ में अभी भी यही प्रश्न चल रहा है कि आख़िर ये सब किसने किया होगा? यही सोचते हुए मैंने कपड़े बदले। थोड़ा आराम किया। फिर अपना जासूसी दिमाग़ चलाने लगा। लेकिन कुछ पता नहीं चल पा रहा था कि ये कैसे हुआ। जब कुछ समझ में नहीं आया तो मैं बरामदे में जाकर बैठ गया।

अचानक! मेरी नज़र हिलते हुए पर्दे पर पड़ी। मैं दबे क़दमों से पर्दे की तरफ़ बढ़ा। फिर धीरे से पर्दा हटा दिया। वहाँ एक भूरी बिल्ली थी। मुझे देखते ही वह 'म्याऊँ–म्याऊँ' करने लगी। शायद वह भूखी थी। मैंने उसे कटोरी में दूध दिया।

मुझे हँसी आ गई। क्योंकि मैंने जो कुछ भी सोचा था, वैसा कुछ भी नहीं था। यह सारा काम इसी शरारत की पुड़िया का था!

Writer : Arpan Mitro
Translators : Soumitra, Saira
Illustrator : Susanta Das

शरारत की पुड़िया

1. लड़के के घर पहुँचने पर घर की हालत कैसी थी ?

2. लड़के को किस बात पर हँसी आ गई ?

3. लड़का घर की हालत के लिए किसे ज़िम्मेदार समझ रहा था और क्यों ?

4. "शरारत की पुड़िया" शब्द का क्या मतलब है ? इस शब्द का प्रयोग करते हुए तीन वाक्य बनाइए।

5. जासूसी का क्या मतलब है ? क्या आपने कभी जासूसी की है, कब और कैसे? अपना अनुभव लिखिए।

स्वादिष्ट पराठा

आज सुबह, तनवीर स्कूल के लिए तैयार होने के बाद, यह देखने के लिए अपना लंच बॉक्स खोला कि उसकी माँ ने उसके लिए क्या तैयार किया है। "वाह! आलू के पराठे!" वह ख़ुशी से उछल पड़ा। तनवीर को अपनी माँ के हाथ का बनाया हुआ पराठा बहुत पसंद हैं। वह इतना पसंद करता है कि किसी के साथ पराठा बाँटना भी पसंद नहीं करता। वह उन्हें तुरंत खा लेता है। लेकिन आज ऐसा नहीं हुआ। स्कूल जाते समय तनवीर ने एक लड़के को देखा। लड़का उसी की उम्र का था। वह कूड़ेदान से कुछ निकाल रहा था। तनवीर ने रुक कर देखा। लड़के ने कूड़ेदान से कुछ बचा हुआ खाना निकाला और खाना शुरू कर दिया। तनवीर ने कुछ देर सोचा। फिर उसने अपना स्कूल बैग खोला और लड़के को पराठे दे दिए। थोड़ी देर तक तनवीर उस लड़के को देखता रहा। खाना खाने के बाद वह लड़का फूट–फूट कर रोने लगा। उसने फिर ख़ुशी से तनवीर की ओर देखा और कहा, "यह स्वादिष्ट है।" तनवीर को बहुत अच्छा लगा।

वह उछलते–कूदते स्कूल पहुँचा। जल्द ही लंच का समय हो गया। तनवीर को भूख लग रही थी। उसने जल्दी से अपना स्कूल बैग खोला और लंच बॉक्स निकाला। एक पल के लिए उसका चेहरा पीला पड़ गया। लेकिन उसने ख़ाली लंच बॉक्स को मुस्कान के साथ वापस अपने बैग में रख लिया।

कुछ घंटों बाद, स्कूल की आख़िरी घंटी बजी। तनवीर दौड़कर घर पहुँचा और सीधे रसोई में चला गया। "मम्मी! मुझे कुछ खाने को दो।" माँ ने तनवीर को आश्चर्य से देखा और पूछा, "अरे! क्या तुम्हें पराठे पसंद नहीं आए?" तनवीर ने लड़के के बारे में सोचा। वह मुस्कराया और कहा, "वह बहुत स्वादिष्ट था।"

Writer : Daljeet Kaur
Translator : Saira Bano
Illustrator : Partho Sen Gupta

स्वादिष्ट पराठा

1. तनवीर को किसी के साथ अपना पराठा बाँटना क्यों पसंद नहीं है ?

2. स्कूल जाते समय तनवीर ने क्या देखा ?

3. "वह बहुत स्वादिष्ट पराठा था" तनवीर ने माँ से ऐसा क्यों बोला ? जबकि उसने पराठा खाया ही नहीं था।

4. "फूट–फूट कर रोना" से क्या मतलब है ? इस मुहावरे का अपने वाक्य में प्रयोग कीजिए ।

5. आपका पसंदीदा व्यंजन क्या है ? उसे बनाने का तरीक़ा भी लिखिए।

सरपट दौड़ती तेज़ो

तेज़ो सड़क पर सरपट दौड़ रही थी। उसने कई मोटर–साइकिलों को अपने पीछे छोड़ दिया। तेज़ो गुनगुना रही थी...

सर–सर सरपट मैं दौड़ूँ,
तेज़–तेज़ मैं चलती जाऊँ
पीछे छोड़ूँ, स्कूटर साइकिल
ट्रिंग – ट्रिंग – ट्रिंग करती जाऊँ

आज तो तेज़ो हवा से बातें कर रही थी। तेज़ो को दो जगह बहुत पसंद हैं, एक तो सड़क और दूसरा नहर का शांत किनारा। सड़क इसलिए क्योंकि उसे रेस लगाने में मज़ा आता है और नहर इसलिए कि वहाँ इसके किनारे गिरगिट की तरह मस्त दौड़ती है। ऐसा लगता है जैसे बिजली चमकी हो! फिर बड़े–बड़े पेड़ों की ठंडी–ठंडी छाँव में उसे इतना मज़ा आता है कि वह घोड़े बेच कर सो जाती है। तेज़ो रोज़ दफ़्तर जाती है। वह अपने साथियों से मिलकर ख़ूब गप्पे भी मारती है। आज शाम तेज़ो किराने की दुकान पर गई थी। वहाँ से ढेर सारा सामान लेकर आई थी। दूसरे दिन तेज़ो को कहीं जाने का मौक़ा नहीं मिला। अँधेरा हो गया था। "आज का दिन तो बेकार गया।" तेज़ो ने सोचा, "कल जब घर से बाहर निकलूँगी, तब जमकर दौड़ूँगी।"

कल का दिन आया। अरे! आज भी कहीं जाना नहीं हुआ। दूसरा दिन, तीसरा दिन, पूरा महीना बीत गया ... लेकिन तेज़ो कहीं नहीं जा पाई। तेज़ो झल्ला कर घर के पीछे एक पुराने गराज में खड़ी हो गई। पूरा एक साल बीत गया। तेज़ो का रंग फीका पड़ गया। उसकी झल्लाहट अब उदासी में बदल गई थी।

अचानक! एक दिन तेज़ो गराज से बाहर आई। उस पर नया रंग चढ़ गया। ग्रीस लगी। उसके टायरों में हवा भर दी गई। और तो और, एक नई चमचमाती घंटी भी लग गई। तेज़ो फिर चमकने लगी। अगले ही दिन उसके हैंडल पर एक टिफ़िन भी टँग गया था। तेज़ो एक बार फिर सड़कों पर सरपट दौड़ने के लिए तैयार थी।

Writer : Deepti, Roshan, Surjeet, Ratnesh

Illustrator : Shubham Lakhera

सरपट दौड़ती तेज़ो

1. तेज़ो को कौन–सी दो जगह पसंद है ?

2. तेज़ो की रोज़ की दिनचर्या क्या थी ?

3. तेज़ो की उदासी का क्या कारण था ?

4. ऐसा क्या हुआ होगा जिसकी वजह से तेज़ो को पूरे साल गैराज में रहना पड़ा? और फिर बाहर उसे किसने निकाला होगा और क्यों ?

5. "घोड़े बेचकर सोना मुहावरे का अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।

समुद्र की लहरें

एक दिन राजू अपने दोस्तों के साथ समुद्र तट पर गया। मौसम ख़ुशगवार था। समुद्र से ठंडी हवा आ रही थी। कई लोग मौज–मस्ती करने के लिए किनारे पर थे। राजू भी अपने दोस्तों के साथ मस्ती कर रहा था।

कुछ देर बाद राजू को भूख लग गई। उसने अपने बैग से चॉकलेट निकाली। उसने रैपर खोला और खा लिया। चॉकलेट के स्वाद का लुत्फ़ उठाने में व्यस्त राजू ने रैपर को किनारे पर फेंक दिया। अचानक! उसने देखा कि एक बड़ी लहर किनारे पर आई और चॉकलेट के रैपर को समुद्र में बहा कर ले गई।

राजू ने समुद्र तट की तरफ देखा। समुद्र तट पर बहुत कचरा था। एक के बाद एक लहरें रेत पर उड़ती गईं। यह ऐसा था जैसे लहरें समुद्र तट को साफ़ करने और कचरे को समुद्र में फेंकने की कोशिश कर रही हों।

राजू ने कुछ देर सोचा। फिर वह अपने दोस्तों के पास गया और कहा, "चलो सफ़ाई करते हैं।" सब सफ़ाई में जुट गए। कुछ घंटों तक उन्होंने कूड़ा उठाया और कूड़ेदान में डाल दिया।

जब सारा काम हो गया और वे सब घर के लिए निकलने लगे, तभी राजू ने समुद्र की तरफ़ देखा। समुद्र शांत था। लहरें अब बहुत धीमी गति से बह रही थीं। अचानक! एक छोटी–सी लहर आई और धीरे से राजू के पैर को छू कर चली गई। ऐसा लगा जैसे धन्यवाद कह रही हो।

Writer : Daljeet Kaur

Illustrator : Partho Sen Gupta

समुद्र की लहरें

1. राजू समुद्र तट पर क्यों गया था ?

2. राजू ने समुद्र तट पर क्या देखा ?

3. लहरें क्या करने की कोशिश कर रही थीं ?

4. समुद्र के किनारे बसे अपने देश के कुछ प्रमुख शहरों के नाम लिखिए ?

5. अपने मोहल्ले को साफ़ रखने के लिए आप क्या–क्या करेंगे?

पैंट की आदत

सुहेल के पास एक प्यारी–सी पैंट थी। वह उसे पहनकर स्कूल जाता था। पैंट को रोज़ सैर करना और नए–नए दोस्तों से मिलना बहुत अच्छा लगता था।

पर जबसे गर्मी की छुट्टियाँ हुई थीं, वह बहुत उदास था। उसे कपबोर्ड की काल–कोठरी में डाल दिया गया था।

रोज़ एक चिड़िया आती और मीठा राग गाकर चली जाती। कौआ भी 'काँव–काँव' का राग सुनाता। जब चहल–पहल हो जाती तो बाई अम्मा आतीं। उनके बरतन माँजने की 'खट–पट' शुरू जाती। सुहेल की मम्मी पराठे बनातीं। उसकी 'छन–छन' की आवाज़ से किचन भर जाता।

फिर धीरे–धीरे चहल–पहल शांत हो जाती। सभी अपने–अपने कामों पर चले जाते। पैंट को बहुत दुःख होता।

एक दिन कपबोर्ड खुला रह गया। बस! मिल गया मौक़ा। पैंट निकल पड़ा चुपचाप। बहुत दिनों बाद बाहर आकर उसका दिल ख़ुश हो गया। उसने चिड़िया का राग सुना, कौवे का गीत और पूरे घर की चहल–पहल देखी। उसे तो मज़ा ही आ गया।

लेकिन सुहेल की निगाह उस पर पड़ गई– ''ओह! मेरी प्यारी पैंट। यह यहाँ कैसे पड़ी है?''

सुहेल ने उसे फिर से कपबोर्ड में डाल दिया।

पर तुम्हें बातऊँ! फिर क्या हुआ? अब जब भी कपबोर्ड का दरवाज़ा खुला रह जाता पैंट अकेले ही टहलने निकल पड़ती सैर करने!

Writer : Dr. Mohd. Sajid Khan

Illustrator : Hariom Patidar

पैंट की आदत

1. पैंट को क्या–क्या करना अच्छा लगता था ?

2. गर्मियों की छुट्टियों में पैंट उदास क्यों हो जाती थी ?

3. पैंट ने कपबोर्ड से निकल कर क्या–क्या किया ?

4. अगर आपको अलग–अलग शहर घूमने का मौक़ा मिले तो आप कौन–कौन से शहर घूमना चाहेंगे?

5. अपनी मज़ेदार पैंट का क़िस्सा लिखिए।

मिस्टर ग़ायब

डॉगी जब घर लौट रहा था तो एक पार्टी दिखी। लोग ख़ूब मस्ती कर रहे थे। एक बच्चा नुकीली टोपी लगाए केक काट रहा था।

अचानक! डॉगी के पैरों से कोई मुलायम चीज़ टकराई– ''उई बाप रे...! कहीं साँप तो नहीं...!'' वह झट से उछल गया।

पर यह क्या! ये तो वैसा ही गुब्बारा था, जैसा पार्टी में बच्चे खेल रहे थे।

डॉगी ख़ुश हो गया– ''इससे तो मेरे बच्चे खेलेंगे।''

उसने गुब्बारे को मुँह में पकड़ने की बहुत कोशिश की। पर वह हाथ न आया। डॉगी ने उसकी डोरी पकड़ ली। अब वह क़ाबू में था।

पिल्ले गुब्बारा पाकर बहुत खुश हुए। उससे खेलने लगे। अचानक! एक के पंजे का नाख़ून लगा और गुब्बारा 'फुस्स' हो गया।

''अभी जो 'फट्ट' बोला है, वह कौन था पापा?''

डॉगी ने हँसते हुए कहा– ''वह 'मिस्टर ग़ायब' थे, ग़ायब हो गए!''

''अब ये 'मिस्टर ग़ायब' कब आएँगे?'' सभी ने एक साथ पूछा।

''फिर किसी दिन। जब कोई पार्टी–शार्टी होगी तो 'मिस्टर ग़ायब' को दावत देने चलेंगे।''

सभी खिल–खिलाकर हँस पड़े।

Writer : Dr. Mohd. Sajid Khan

Illustrator : Hariom Patidar

मिस्टर ग़ायब

1. पार्टी में क्या–क्या हो रहा था?

2. डॉगी ने गुब्बारे अपने क़ाबू में करने के लिए क्या–क्या किया ?

3. डॉगी ने मिस्टर ग़ायब किसे बोला और क्यों ?

4. आपके यहाँ कब–कब पार्टी होती है? उस समय क्या–क्या करते हैं?

कब	क्या

5. अपनी किसी ख़ास दावत का अनुभव लिखिए।

अपने जैसी

एक सप्ताह बाद ईद आने वाली थी। आज इतवार का दिन था इसलिए अम्मी–अब्बू घर की साफ़–सफ़ाई में लगे हुए थे। बाक़ी दिन तो अम्मी–अब्बू को दफ़्तर से फुरसत ही नहीं मिलती थी। साफ़–सफ़ाई में थोड़ी–बहुत मदद ज़ोया भी कर रही थी या यूँ कहें कि काम को और बढ़ा रही थी। किताबों की अलमारी साफ़ करते वक़्त अब्बू ने सभी किताबें मेज़ पर रखीं। वह एक–एक किताब को साफ़ करके अलमारी में रखने लगे। ज़ोया जोकि बहुत देर से किताबों को उलट–पलट रही थी उसने अब्बू से पूछा, "अब्बू पढ़–लिखकर क्या होता है?"

"बेटा पढ़–लिखकर कलेक्टर, डॉक्टर, टीचर और भी बहुत कुछ बन सकते हैं। तुम क्या बनोगी?" अब्बू ने एक और किताब अलमारी में रखते हुए कहा।

"डॉक्टर बनेगी", चारपाई पर लेटे–लेटे दादा जी ने कहा।

"नहीं– नहीं टीचर बनेगी हमारी ज़ोया ताकि अपने घर को भी वक़्त दे पाए", कुर्सी पर बैठी दादी ने कहा।

"पर अब्बू मैं तो..." ज़ोया अपनी बात पूरी कर पाती, उससे पहले ही अब्बू ने कहा, "तुम तो पढ़–लिखकर इंजीनियर बनना और मेरा अधूरा ख़्वाब पूरा करना।"

"पर अब्बू मैं तो..."

"मैं तो क्या मेरी बच्ची, तुम तो सबसे पहले अच्छा इंसान बनना।" अम्मी ने उसकी बात काटते हुए कहा।

"हम्म... पर मैं क्या बनना चाहती हूँ, मुझसे भी तो कोई पूछ लीजिए," ज़ोया ने झल्लाते हुए कहा।

"हाँ, बताओ तो तुम क्या बनना चाहती हो?" सभी ने एक आवाज़ में पूछा।

"मैं तो, अपने जैसी ही बनना चाहती हूँ।"

ज़ोया की यह बात सुनकर सभी एक–दूसरे की तरफ़ हैरानी से देखने लगे।

Writer : Meena Sharma

Illustrator : Habib Ali

अपने जैसी

1. सफ़ाई के लिए इतवार का दिन क्यों तय किया गया ?

2. दादी ऐसा क्यों कहा कि हमारी ज़ोया टीचर बनेगी ?

3. "तुम तो मेरा अधूरा ख़्वाब पूरा करना" अब्बू ने ज़ोया से ऐसा क्यों कहा ?

4. भारत में मनाए जाने वाले कितने त्योहारों की सूची बना सकते हैं, बनाइए।

5. आप पढ़–लिखकर क्या बनना चाहते हैं और क्यों ?

सफ़ेद जूते

निर्वी अपने काले जूते चमकाने में मस्त थी। माँ ने आवाज़ लगाई, "निर्वी, आज तुम्हारी किताबें टेबल पर ही रहेगी क्या? इन्हें बैग में तो रख लो।"

निर्वी जूतों पर ब्रश रगड़ते हुए बोली, "मम्मी, आज तो खेल–दिवस है। फिर वहाँ बैग का क्या काम?"

निर्वी को खेलों में बड़ी रुचि है। वह हर साल चम्मच–दौड़ में प्रथम आती है। पिछले कई दिनों से वह ख़ूब तैयारी भी कर रही थी। चम्मच में कंचे को रख मुँह में दबाए कभी इस कमरे में जाती, तो कभी उस कमरे में। कभी सीढ़ियों पर, तो कभी मैदान में अभ्यास करती।

उसे पूरी उम्मीद थी कि इस बार भी वह ही जीतेगी।

फटाफट तैयार होकर वह स्कूल बस में सवार हो गई। बस में सभी बच्चे 'निर्वी–निर्वी' चिल्लाने लगे। सभी एक सुर में बोले, "निर्वी, इस बार भी तुम ही जीतोगी।"

बस से उतर कर सभी बच्चे क़तार में हो लिए। क़तार से एक–एक करके गेट से अंदर जाने लगे। निर्वी जैसे ही गेट पर पहुँची, टीचर बोलीं, "तुम लाइन से अलग खड़ी हो जाओ।" उसे समझ में नहीं आया कि उसे अलग क्यों कर दिया गया।

सभी बच्चे स्कूल के अंदर चले गए। वह अभी भी बाहर गेट पर खड़ी थी। उसने डरते–डरते टीचर से पूछा, "मैडम मैं कब अंदर आऊँगी?"

टीचर बोलीं, "तुम अंदर नहीं आ सकतीं, क्योंकि तुमने आज सफ़ेद जूते नहीं पहने हैं।" अपने पैरों की तरफ़ देखकर वह झुँझला उठी। इन काले–सफ़ेद जूतों के चक्कर से तो सारा काम ही ख़राब हो गया था।

निर्वी सोच में पड़ गई, "क्या केवल सफ़ेद जूतों से ही दौड़ लगाई जा सकती है? मैं तो बिना जूतों के भी दौड़ लगा सकती हूँ।"

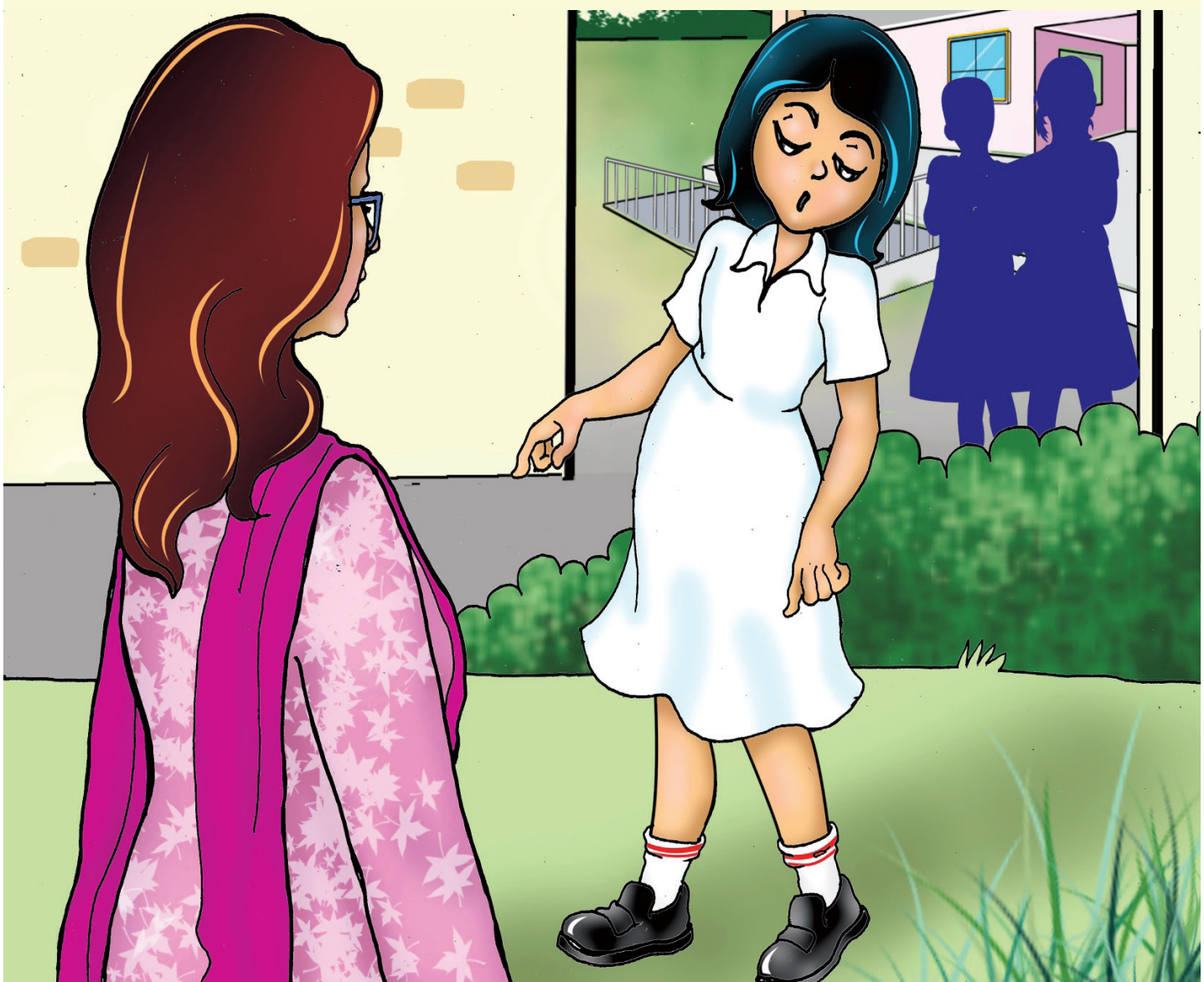

Writer : Amritlal Yadav

Illustrator : Mitrarun Halder

सफ़ेद जूते

1. निर्वी को किस बात की उम्मीद थी और क्यों ?

2. टीचर ने निर्वी को गेट के अंदर क्यों जाने नहीं दिया ?

3. "क्या केवल सफ़ेद जूतों से ही दौड़ लगाई जा सकती है, मैं तो बिना जूतों के भी दौड़ लगा सकती हूँ ?" निर्वी ने ऐसा क्यों सोचा ?

4. खेल दिवस पर आपके स्कूल में कौन–कौन सी प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं ? और आप किसमें भाग लेते हैं ?

5. आपके अनुसार कहानी में आगे क्या हुआ होगा ?

मैं स्कूल नहीं जाऊँगा

"सुनो अहद! वजीहा की तरह तुम्हारा भी स्कूल में दाख़िला करवा देती हूँ। तुम भी आपी के साथ स्कूल पढ़ने जाना।" अम्मा वजीहा की किताबें बस्ते में रखते हुए बोलीं।

"मैं नहीं जाऊँगा... । वजीहा को ही भेजिए स्कूल। लड़कियाँ स्कूल जाती हैं, लड़के नहीं।"

"ऐसा तुमसे किसने कहा?"

"किसी ने नहीं। बस मुझे पता है। अहद तपाक से बोला।

अहद को पढ़ने का बिल्कुल शौक़ नहीं था। जब भी कभी उसके सामने पढ़ने की बात होती तो वह ऐसे ही जवाब देता।

अम्मा उसे बहुत समझातीं, लेकिन अहद स्कूल जाने के लिए तैयार नहीं होता। अम्मा और बाबा लगातार उसे मनाने की तरकीबें सोचते रहते।

एक महीने बाद अम्मा और बाबा की मेहनत रंग लाई। अहद ने पड़ोस की जूही आपी के पास ट्यूशन पढ़ने के लिए 'हाँ' कर दी।

अम्मा ने यही सोचकर चैन की साँस ली कि एक बार यह आदत बन गई तो स्कूल भी जाने लगेगा।

दोपहर का वक्त था। अम्मा ने अहद को तैयार किया और बोलीं, "चलो अहद, ट्यूशन का टाइम हो गया है। जूही आपी के पास पढ़ने जाना है न!"

"मुझे भूख लगी है, दूध पीकर जाऊँगा।" अहद बोला।

''अभी तो तुमने खाना खाया था?'' अम्मा ने बुदबुदाते हुए उसके हाथ में दूध का गिलास पकड़ाया। दूध ख़त्म करते ही अहद लेट गया।

अम्मा बोलीं, ''अब जाओ पढ़ने।''

''मुझे केला खाना है। मुझे और भूख लगी है।'' अहद बोला।

"लो, जल्दी से खाओ और जाओ पढ़ने।" अम्मा ने जल्दी से अहद के हाथों में केला पकड़ाया।

केला ख़त्म करते ही अहद फिर से लेट गया।

"अब क्या हुआ, लेट क्यों गए?" अम्मा चिल्लाईं।

"मेरा पेट भर गया। अब मुझसे उठा नहीं जा रहा। नींद भी आ रही है।" ये कहकर अहद जल्दी से बिस्तर में दुबक गया और आँखें मूँद ली।

जब अहद की नींद खुली तब तक वजीहा और आलिया भी आ गईं। सामने तस्वीरों वाली बहुत सारी रंग–बिरंगी किताबें फैली हुई थीं। किताबें लेने के लिए दोनों में बहस हो रही थीं।

अम्मा ने आँखों से इशारा करते हुए कहा, ''चलो, हटो तुम दोनों! ये किताबें तो अहद की हैं। अगर वह नहीं लेना चाहेगा, तो तुम दोनों को दे दूँगी।'' फिर अहद की तरफ़ देखते हुए बोलीं, ''क्यों, दे दूँ ये सारी किताबें इन दोनों को?''

''क्यों ? ये तो मेरी किताबें हैं न! इन्हें तो मैं लूँगा!'' कहते हुए अहद ने सारी किताबें अपनी तरफ़ खींच ली। फिर धीरे से कहा, ''कल से मैं भी स्कूल जाऊँगा!'' अम्मा ख़ुश हो गईं।

Writer : Saira Bano

Illustrator : Mitrarun Halder

मैं स्कूल नहीं जाऊँगा

1. अहद स्कूल ना जाने के लिए क्या–क्या बहाने बनाता था ?

2. अहद को ट्यूशन ना जाना पड़े इसके लिए उसने क्या–क्या किया ?

3. रंग–बिरंगी किताबें कौन लाया था और क्यों ?

4. 'मेहनत रंग लाई' इस का क्या मतलब है ? इसका अपने वाक्य में प्रयोग कीजिए।

5. आपके अनुसार अहद स्कूल और ट्यूशन ना जाने के लिए जो भी कर रहा था ,क्या वो ठीक था ? अगर हाँ तो क्यों ? अगर नहीं तो क्यों ?

7 का टेबल (पहाड़ा)

गर्मी की छुट्टियाँ चल रही थीं। स्कूल की कसर मम्मी घर पर पूरी कर रही थीं। पापा ने हिन्दी के कुछ कार्ड ला रखे थे। मैं उनकी मदद से हिन्दी सीख रही थी। मैं दिन भर उनसे खेलती भी। कभी उन्हें ताश के पत्तों की तरह बाँटती, कभी उनमें बने चित्रों को देखकर कहानी बनाने की कोशिश करती। मुझे उनके साथ खेलना बहुत अच्छा लगता था। पर जिस चीज़ से मुझे बहुत उलझन होती, वह था टेबल (पहाड़ा) याद करना।

मम्मी जब शाम में दूध लेने जातीं तो मुझे टेबल याद करने का काम दे जातीं। मैंने 5 तक टेबल याद कर लिए थे। 6 को भी जैसे–तैसे रट ही लिया। अब बारी थी 7 की। मैंने कोशिश की। कुछ–कुछ याद हुआ। पर जैसे ही मम्मी को सुनाने की बारी आती, मैं सब कुछ भूल जाती। फिर मम्मी से अच्छी ख़ासी डाँट खानी पड़ती। तब मुझे पापा की बहुत याद आती। वह मुझे डाँट से बचा लेते, पर पापा काम से अक्सर बाहर रहते थे।

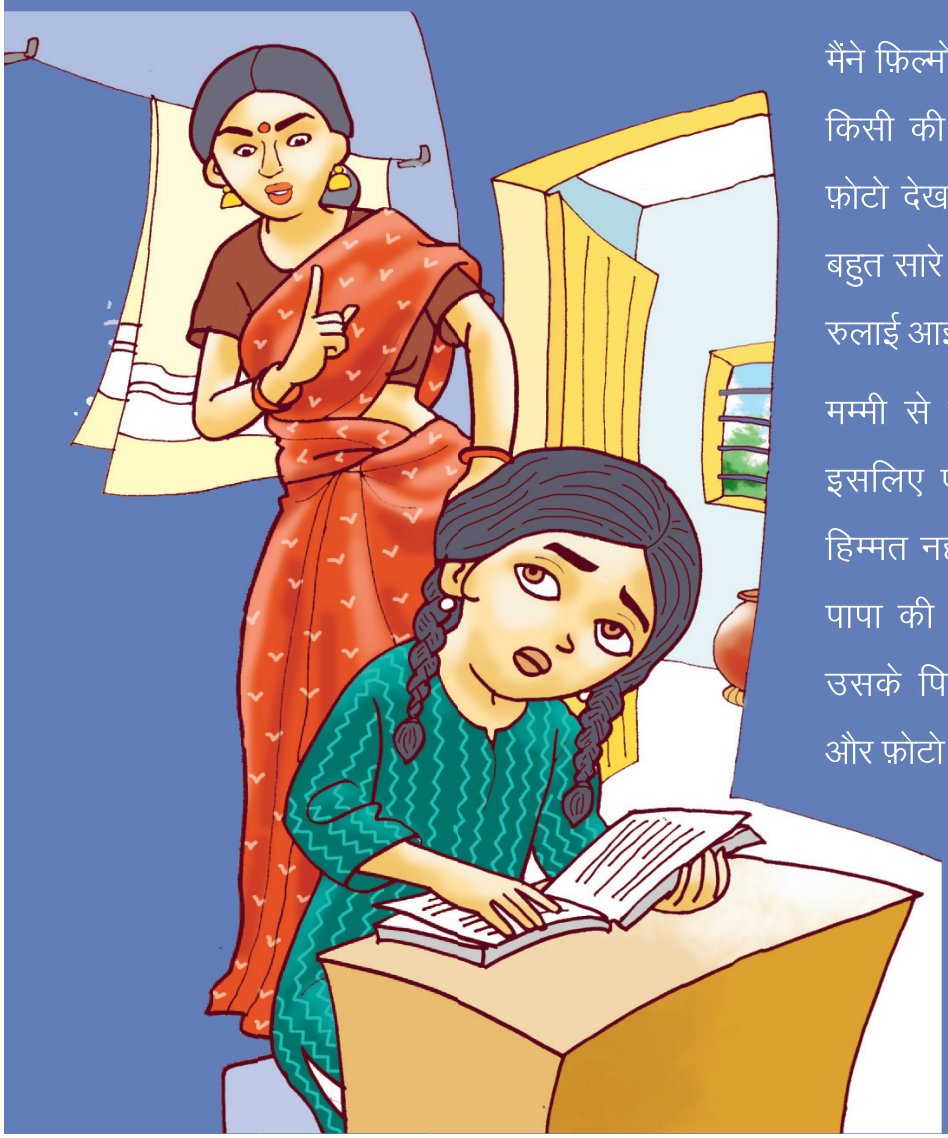

मैंने फ़िल्मों में देखा था कि जब किसी को किसी की याद आती है, तो वह उसकी फ़ोटो देख कर रोता है। मैंने भी पापा के बहुत सारे फ़ोटो एल्बम में देखे। मुझे बहुत रुलाई आई।

मम्मी से पहले ही डाँट खा चुकी थी, इसलिए एल्बम से फ़ोटो निकालने की हिम्मत नहीं जुटा पाई। लेकिन पास ही पापा की लिखी एक किताब रखी थी। उसके पिछले पन्ने पर उनका परिचय और फ़ोटो था। मैंने वह किताब उठा ली।

उसे सीने से लगाकर उन्हें याद करने लगी। फिर जाने कब सो गई। अगले दिन मम्मी ने मुझसे कहा, "सुनो, आज पूरे दिन 7 का टेबल याद करो। शाम को सुनूँगी।"

मम्मी ने मुझे कार्ड से भी नहीं खेलने दिया। मुझे बहुत गुस्सा आ रहा था। मैं कर भी क्या सकती थी। मैंने टेबल याद करना शुरू किया। शाम हो गई थी, इसलिए मम्मी दूध लेने चली गईं।

मुझे अब तक टेबल याद नहीं हुआ था। मुझे बहुत डर लग रहा था। सोच रही थी कि मम्मी आज डाँटेगी नहीं, बल्कि मार लगाएँगी। फिर पता नहीं मैं क्या–क्या सोचती रही। मैंने कमरे के दोनों दरवाज़े अन्दर से बन्द कर लिए। जिस कॉपी में टेबल लिखी उसको पेट पर उल्टा रखकर सो गई। मुझे 5 मिनट भी नहीं लगे सोने में। मैं कूलर की हवा में मस्ती से सो रही थी। तभी मुझे लगा कि कोई मेरे कंधे पर मार रहा है।

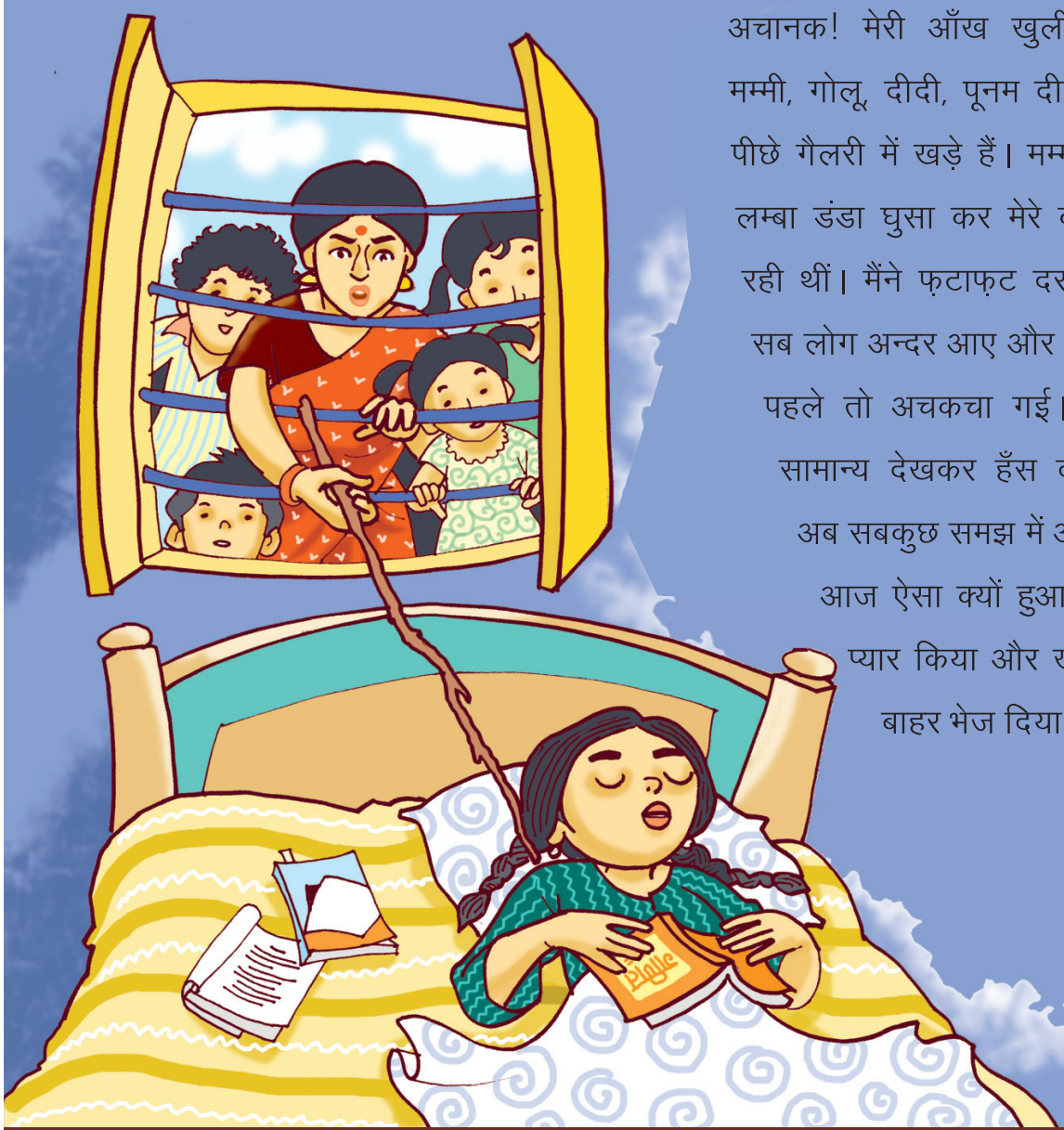

अचानक! मेरी आँख खुली। मैंने देखा मम्मी, गोलू, दीदी, पूनम दीदी, आंटी सब पीछे गैलरी में खड़े हैं। मम्मी खिड़की से लम्बा डंडा घुसा कर मेरे कंधे को हिला रही थीं। मैंने फ़टाफ़ट दरवाज़ा खोला। सब लोग अन्दर आए और हँसने लगे। मैं पहले तो अचकचा गई। फिर स्थिति सामान्य देखकर हँस दी। मम्मी को अब सबकुछ समझ में आ गया था कि आज ऐसा क्यों हुआ! उन्होंने मुझे प्यार किया और खेलने के लिए बाहर भेज दिया।

Writer : Khushi

Illustrator : Partho Sen Gupta

7 का टेबल (पहाड़ा)

1. कहानी में 'मैं' शब्द किसके लिए इस्तेमाल किया गया है ?

2. कहानी में क्यों किसी को उलझन होती थी ?

3. "स्कूल की कसर मम्मी घर पर पूरी कर रही थी।" आपके अनुसार इस वाक्य का क्या मतलब है ? लिखिए।

4. आपको किस–किस मौक़े पर किसकी याद आती है ?

5. इस कहानी से जुड़ा अपना कोई बचपन का क़िस्सा लिखिए।

Notes